हिन्दी विशिष्ट

प्रस्तावना :–

वर्तमान के बदलते हुए परिवेश – राजनीतिक, सामाजिक, व्यापारिक, तकनीकी शब्दावली, मीडिया और पत्र–पत्रिकाओं के वर्चस्व के कारण भाषिक पहुँच में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ चुके हैं। हम मानक भाषा की पहचान खोते जा रहे हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और साहित्यिक सोच से दूर भी हटते जा रहे हैं। अतः बच्चों को इन क्षेत्रों से परिचित कराने तथा इनके अनुरूप भाषा प्रयोग– लिखित और मौखिक –अनिवार्य हो गऐ हैं। इसके लिये **भाषा की ग्रहणशीलता और अभिव्यक्ति** को सशक्त बनाना होगा उनमें भाषिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास करने हेतु विशेष प्रयास करने होंगे, जिससे उनकी सोच में परिवर्तन के साथ **अभिवृत्ति** (सद्विचार) में बदलाव भी आएगा, जिससे बच्चों में आस्था, मानव–प्रेम, देश–प्रेम, सहृदयता और संवेदना का विकास होगा। हिन्दी भाषा के अध्ययन से उनमें सृजनात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और विभिन्न प्रयुक्तियों के उपयोग की सोच विकसित होगी। भावों, विचारों के अनुसार उपयुक्त विधा का चयन करते हुए वे मौलिक रचना, कहानी, संवाद, गीत आदि लिखकर **सृजनशीलता को प्रोत्साहन** दे सकेंगे और राष्ट्रीय–जीवन से भावनात्मक रूप से जुड़ सकेंगे।

शिक्षण के उद्देश्य –

(1) भाषा की ग्रहणशीलता –

- शुद्ध, सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली भाषा में व्यक्त विचारों को सुनना और पढ़ना।
- विभिन्न भाषा शैलियों से परिचय।
- मानक भाषा से परिचय।
- प्रसंगानुकूल भाषा प्रयोग करने की क्षमता का विकास।
- साहित्य के माध्यम से भाषानुभूति और रसानुभूति का विस्तार।
- भाषिक पहचान, तुलना, विश्लेषण और संश्लेषण।

(2) अभिव्यक्ति –

- शुद्ध, सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली भाषा में सुनकर तथा पढ़कर अपने विचार अभिव्यक्त करना।
- साहित्य की विविध विधाओं के स्वरूप का ज्ञान तथा उसका यथा स्थान समुचित प्रयोग।
- साहित्य के मूल्यांकन की क्षमता का विकास।

(3) अभिवृत्ति में परिवर्तन –

- साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से उनमें राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास।
- साहित्य के माध्यम से सद्वृत्तियों यथा – आस्था, प्रेम, देशप्रेम, मानव–प्रेम, सहृदयता, संवेदना का विकास।

– नाटक/एकांकी के माध्यम से जीवन की विभिन्न स्थितियों से परिचय कराना तथा तद्नुसार प्रेरणा देना।

– आँचलिक साहित्य और साहित्यकारों का परिचय एवं उसका महत्व समझना।

(4) सृजनशीलता को प्रोत्साहन –

– अपने भावों, विचारों की मौलिक अभिवृत्ति की क्षमता का विकास।

– भावानुकूल भाषा प्रयोग करने की क्षमता।

– कल्पना के माध्यम से विचारों को नया रूप देने की क्षमता का विकास।

– साहित्य के माध्यम से कविता, कहानी, संवाद, गीत आदि के मौलिक सृजन की प्रेरणा।

शिक्षण युक्तियाँ –

यह सर्वविदित तथ्य है कि शिक्षकों की भूमिका अध्यापन में बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे छात्रों के बीच उचित वातावरण का निर्माण करके भाषिक अध्ययन को सहज एवं ग्राह्य बना सकते हैं।

1. शिक्षण युक्तियों से शिक्षण को नई उत्तेजना मिलती है और ज्ञान प्राप्त करने के नए द्वार खुलते हैं।
2. शिक्षण युक्तियाँ पाठ्यक्रम को सरल, सहज और सरस बनाती हैं।
3. उनका भाषा पर अधिकार होता है, दृष्टिकोण विकसित होता है और अभिव्यक्ति सशक्त होती है।
4. शिक्षक और छात्रों के बीच संवादात्मक स्थिति बनती है।
5. ऐसे वातावरण का निर्माण होता है कि जिससे छात्रों की भागीदारी और सृजनात्मक क्षमता बढ़ती है।
6. व्यंग्य, चुटकुले, कहानी, दृष्टान्त आदि से भाषा शिक्षण रोचक बनता है।

पाठ्यसामग्री –

कक्षा 11 और 12 तक आते–आते छात्रों में साहित्य के प्रति संचेतना जागृत होने लगती है। वे अतीत को जानना चाहते हैं, वर्तमान के प्रति उत्सुकता तथा गौरवपूर्ण भविष्य के लिए उनका चिन्तन उन्हे आन्दोलित करने लगता है। वह वर्तमान जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी बदलाव की आधुनिक सोच को भूमण्डलीय परिवर्तन से जोड़ना चाहता है। इन्हीं परिवर्तनों को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान पाठ्यक्रम इन स्थितियों के लिए छात्रों को तैयार करेगा।

हिन्दी विशिष्ट की पाठ्यपुस्तक में लगभग 18–20 पाठ रखे जाना प्रस्तावित है। आवश्यकतानुसार स्तर के अनुकूल इनमें परिवर्तन अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त सहायक वाचन के 10–12 पाठ अलग से रखने का भी प्रावधान है।

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा – 11

समय 3 घण्टे **पूर्णांक–100**

क्रम	विषय सामग्री		अंक		कालखण्ड
1.	पद्य खण्ड –	पद्य साहित्य का इतिहास	04		
		कवि परिचय, व्याख्या, सौन्दर्य बोध एवं विषय वस्तु तथा मूल्य पर आधारित प्रश्न	23	**27**	40
2.	गद्य खण्ड –	गद्य साहित्य : विविध विधाएँ	4		
		लेखक परिचय, व्याख्या, विचार बोध एवं विषय बोध पर प्रश्न	19	**23**	35
3.	सहायक वाचन –	विविध संकलित पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न	10		15
4.	भाषाबोध –	विराम–चिह्न, शुद्ध वाक्य, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और भाव–विस्तार	10		15
5.	काव्य बोध –	काव्य परिभाषा, भेद, शब्द गुण, शब्द शक्ति, छंद एवं अंलकार	10		15
6.	अपठित बोध –		05		10
7.	पत्र लेखन –		05		10
8.	निबंध लेखन –		10		20
	पुनरावृत्ति				20
		योग	**100**		**180**

निर्धारित पाठ्य पुस्तक –"स्वाति" (गद्य–पद्य संकलन) सहायक वाचन समाहित

1.	**पद्य खण्ड –** पद्य साहित्य का विकास आदिकाल, भक्तिकाल, एवं रीतिकाल के सामान्य परिचय पर आधारित प्रश्न	04	**27**
	पद्य पाठों पर आधारित कवि का साहित्यिक परिचय, (रचनाएँ और काव्यगत विशेषताएँ भावपक्ष, कलापक्ष) पर प्रश्न	05	
	दो में से एक पद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या	05	
	सौन्दर्यबोध पर आधारित प्रश्न	07	
	भावपक्ष पर (विषयवस्तु एवं मूल्य आधारित) प्रश्न	06	
	गद्य खण्ड–		
	गद्य साहित्य – विविध विधाओं के सामान्य परिचय पर प्रश्न	04	**23**
	संक्षिप्त लेखक परिचय – रचनाएँ, भाषा–शैली पर प्रश्न	05	
	दो गद्यांश में से एक की प्रसंग सहित व्याख्या पर प्रश्न	05	
	विचार–बोध संबंधी प्रश्न	05	
	विषय–बोध पर प्रश्न	04	

सहायक वाचन– (पाठ्यपुस्तक में समाहित)		
संकलित पाठों की विषयवस्तु पर प्रश्न		**10**
भाषा बोध–		
विराम चिह्न पर आधारित प्रश्न	02	**10**
शुद्धवाक्य रचना पर आधारित प्रश्न	02	
मुहावरे/लोकोक्तियों पर आधारित प्रश्न	02	
भाव विस्तार पर आधारित प्रश्न	04	
काव्य बोध–		
काव्य की परिभाषा, काव्य के भेद पर आधारित प्रश्न	02	**10**
काव्य–गुण, पर आधारित प्रश्न	02	
शब्द–शक्ति पर आधारित प्रश्न	02	
अलंकार– भ्रान्तिमान, सन्देह, विरोधाभास, अपह्नुती पर आधारित प्रश्न	02	
छंद– मात्रिक, वर्णिक छंद–कुण्डलियाँ, घनाक्षरी, मन्दाक्रान्ता पर आधारित प्रश्न	02	
अपठित बोध –		
गद्यांश/पद्यांश, शीर्षक, सारांश पर आधारित प्रश्न		**05**
पत्र लेखन –		
औपचारिक पत्र, अनौपचारिक पत्र पर आधारित प्रश्न		**05**
निबन्ध लेखन –		
सामाजिक, सांस्कृतिक, समसामयिक समस्याओं पर आधारित विषयों पर प्रश्न		**10**

प्रायोजना कार्य–

1) क्षेत्रीय बोली–पहेलियाँ, चुटकुले, लोकगीत, लोक कथाओं का परिचय तथा खड़ी बोली में उनका अनुवाद।
2) दूरदर्शन/आकाशवाणी के कार्यक्रम पर प्रतिक्रियाएँ/विश्लेषण।
3) हिन्दी साहित्य का स्वतंत्र पठन/टिप्पणी एवं प्रेरणाएँ।
4) हस्त लिखित पत्रिका तैयार करना।
5) म.प्र. से प्रकाशित होने वाली हिन्दी भाषा की पत्र पत्रिकाओं की जानकारी।

टिप्पणी–

प्रायोजना कार्य से सम्बन्धित विषय वस्तु पर(अंक आवंटित न होने के कारण) परीक्षा में प्रश्न पूछे जाना अपेक्षित नहीं है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक - "स्वाति" (गद्य-पद्य संकलन) सहायक वाचन समाहित मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा संकलित एवं मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित।